18 अप्रैल 2020

स्नातक पार्ट 2 ऑनर्स

विषय ■ राजनीति विज्ञान

प्रसंग★★☆ तुलनात्मक राजनीति के उपागम(शेष व्याख्यान सँख्या 8)

By डॉ० देवेश पाण्डेय

MLS College sarisab pahi madhubani

राजनीतिक व्यवस्था की क्रियात्मकता

(The Functioning of a Political System)

प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था को कुछ महत्वपूर्ण कार्य करने पड़ते हैं। उसकी क्रियात्मकता से तात्पर्य उसके द्वारा निष्पादित किए जाने वाले कार्यों से है। उसे अपने अन्दर या समाज की तरफ से उठने वाली मांगों या निवेशों के रूप में आने वाली बातों के बारे में स्वयं को क्रियाशील बनाकर रूपान्तर की प्रक्रिया द्वारा उन मांगों को निर्गतों या निर्णयों में बदलना पड़ता है। प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था को कार्य-निष्पादन तीन स्तरों पर करना पड़ता है :-

(I) प्रबोधक प्रक्रिया स्तर (The Stage of Monitoring Process)

(II) रूपान्तर प्रक्रिया स्तर (The Stage of Conversion Process)

(III) प्रतिसम्भरण प्रक्रिया स्तर (The Stage of Feedback Process)

(I) प्रबोधक प्रक्रिया स्तर

(The Stage of Monitoring Process)

प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था को संवेदनशील बनाने के लिए कुछ प्रबोधक (Monitoring) तत्वों की आवश्यकता पड़ती है। ये तत्व वातावरण व राजनीतिक व्यवस्था दोनों की उपज हो सकते हैं। इन प्रबोधक तत्वों को मांगें या निवेश तथा समर्थन कहा जाता है। प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था को

क्रियाशील बनाने में इन मांगों या निवेशों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पहले तो ये मांगें और निवेश वातावरण से आती हैं, लेकिन व्यवस्था की क्रियाशीलता के बाद ये राजनीतिक व्यवस्था के अन्दर से भी जन्म लेना शुरु कर देती हैं।

(II) रूपान्तर प्रक्रिया स्तर

(The Stage of Conversion Process)

राजनीतिक व्यवस्था को अपने अन्दर व बाहर से उठने वाली मांगों पर विचार-विमर्श करके उन्हें निर्णयों या निर्गतों के रूप में परिवर्तित करने का भी महत्वपूर्ण काम करना पड़ता है। विचार-विमर्श की आवश्यकता इसलिए पड़ती है कि कई निवश या मांगें अनुचित व राजनीतिक व्यवस्था को परेशान करने वाली होती हैं। इसलिए रूपान्तर स्तर पर अनुचित मांगों को अस्वीकार कर दिया जाता है या फिर विचार करनेके लिए सुरक्षित रख लिया जाता है। प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था को मांगों को निर्गतों में बदलने से पहले अपने साधनों, व्यवस्था के लक्ष्यों, मांग का औचित्य आदि पर ध्यान देना पड़ता है। राजनीतिक व्यवस्था द्वारा स्वीकृत मांगें व निवेश रूपान्तरण प्रक्रिया द्वारा निर्णयों, नीतियों व कानूनों के रूप में पर्यावरण में आ जाते हैं।

(III) प्रतिसम्भरण स्तर

(The Stage of Feedback Process)

यह देखने के लिए कि मांगों के रूप में आने वाले निवेशों का रूपान्तरण उसी प्रकार हुआ है या नहीं जिस प्रकार मांग करने वाले चाहते हैं, प्रतिसम्भरण की प्रक्रिया अपनाई जाती है। प्रतिसम्भरण प्रक्रिया द्वारा मांगों की प्रभावकारिता जांची जाती है। यदि किसी मांग की प्रभावकारिता कम रह जाती है तो उसे प्रभावशाली राय देकर फिर से निर्णयों, नियमों व नीतियों के रूप में संशोधन के साथ पर्यावरण में छोड़ दिया जाता है। प्रतिसम्भरण द्वारा निर्णयों के विरुद्ध जनता द्वारा किए जाने वाली प्रतिक्रिया या समर्थन दोनों का पता चल जाता है। जिन निर्गतों पर जनता विरोध उत्पन्न करती है, उन पर फिर से विचार करके स्वागत योग्य बनाया जाता है। इस प्रकार प्रतिसम्भरण मांगों के निर्गतों या निर्णयों के रूप में बदलने के बाद निर्गतों के विरोध या समर्थन को जांचने का तरीका है।

18 अप्रैल 2020

स्नातक पार्ट 1 सब्सिडरी

विषय ■ राजनीति विज्ञान

प्रसंग ■■■■■राजनीति सिद्धान्त की प्रकृति एवम महत्व(शेष व्याख्यान संख्या 8)

By डॉ० देवेश पाण्डेय

MLS College sarisab pahi madhubani

(*i*) **उदारवादी संकीर्णवाद:** संकीर्णवाद का यह रूप संकीर्णवादी नीतियों एवं मूल्यों के साथ कुछ उदारवादी तत्त्वों का मिश्रण है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से, इस शब्दावली में आर्थिक उदारवाद, जो स्वेच्छाचारी बाज़ार व्यवस्था का समर्थन करता है तथा परम्परागत संकीर्णवाद, जो स्थापित परम्परागत उदारवाद से भिन्न है जिसने आर्थिक तथा सामाजिक दोनों क्षेत्रों में व्यक्ति की स्वतन्त्रता का समर्थन किया। अधिकतर इसे मुक्त बाज़ार अर्थव्यवस्था तथा व्यैक्तिक उत्तरदायित्व, नागरिक अधिकारों की सुरक्षा तथा सीमित कल्याणकारी राज्य के साथ जोड़ा जाता है।

(*ii*) **संकीर्णवादी उदारवाद:** यह उदारवाद का वह स्वरूप है जिसमें कुछ संकीर्णवादी तत्त्वों का मिश्रण किया गया है। यह परम्परागत उदारवाद का अधिक सकारात्मक परन्तु कम उग्रवादी रूप है।

(*iii*) **इच्छास्वातंत्र्यवादी संकीर्णवाद:** इस प्रकार का संकीर्णवाद अमेरीका तथा कनाडा में लोकप्रिय है जिसमें इच्छास्वातंत्र्यवादी आर्थिक मुद्दों को संकीर्णवाद के कुछ तत्त्वों के साथ जोड़ा गया है। ये स्वेच्छाचारी नीतियाँ जैसे मुक्त व्यापार का समर्थन, संघीय निधि (Federal Reserve) का विरोध तथा सभी प्रकार के व्यापारिक नियन्त्रणों का विरोध करता है। इसी तरह ये सभी प्रकार के पर्यावरण नियमों, सामूहिक कल्याण, सब्सिडी तथा अन्य आर्थिक हस्तक्षेप का भी विरोध करते हैं।

(*iv*) **सांस्कृतिक संकीर्णवाद:** संकीर्णवाद का यह स्वरूप किसी देश अथवा संस्कृति की विरासतों को संरक्षित करने का समर्थन करता है। इस प्रकार की संस्कृति पश्चिमी, चीनी अथवा भारतीय जैसी विशाल संस्कृति हो सकती है या तिब्बत जैसी छोटी। सांस्कृतिक संकीर्णवाद अतीत् के नैतिक नियमों का पालन करने के पक्ष में है और ये नैतिक नियम रोमान्टिक, सांस्कृतिक, संस्थागत, आर्थिक अथवा राजनीतिक कुछ भी हो सकता है। सामाजिक संकीर्णवाद के सदर्भ में, ये नियमों की नैतिकता से जुड़े सवाल भी हो सकते हैं कुछ एक संस्कृतियों मे समलैंगिकता को अनैतिक माना जाता है। सांस्कृतिक संकीर्णवादी का तर्क है कि पुरानी संस्थाएँ किसी एक सांस्कृतिक तथा स्थान से जुड़ी हुई होती है, अत: उन्हें संरक्षित किया जाना आवश्यक है। कुछ अन्य लेखकों का विचार है कि लोगों को अपने सांस्कृतिक सिद्धान्तों, अपनी भाषा तथा अपनी परम्पराओं को संरक्षित करने का अधिकार है।

(*v*) **धार्मिक संकीर्णवाद:** इस प्रकार का संकीर्णवाद किसी विशिष्ट विचारधारा को संरक्षित करना चाहते हैं, कभी सामाजिक स्तर पर इसके नैतिक मूल्यों का प्रचार करके अथवा कई बार इन्हें राज्य के क़ानून का एक भाग बनाकर। धार्मिक संकीर्णवाद धर्मनिरपेक्ष रीति-रिवाजों का भी समर्थन कर सकते हैं या इसे उनका समर्थन भी मिल सकता है। कई बार और कई स्थानों पर धार्मिक संकीर्णवाद को उन संस्कृतियों से चुनौती भी मिल सकती है जहाँ वे कार्यरत होते हैं।

(*vi*) **हरित संकीर्णवाद:** इस शब्द का प्रयोग उन संकीर्णवादियों के लिए किया जाता है जिन्होंने पर्यावरण को अपनी विचारधारा का एक अंग बना लिया है। ये लोग एक ऐसे हरित कार्यक्रम का समर्थन करते हैं जिसमें कार्यालय स्थानों, पार्किंग स्थलों पर अधिकाधिक टैक्स लगाया जाये, हवाई अड्डों के विकास को रोका जाये तथा भारी एवं हल्के सभी वाहनों पर टैक्स लगाया जाये।

समग्र रूप से, संकीर्णवाद मानव प्रकृति के नकारात्मक तथा निराशावादी दृष्टिकोण पर आधारित हैं। सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए परम्परागत शासन व्यवस्था का समर्थन इस विचार पर आधारित है कि व्यक्ति मूलत: स्वार्थी, अविवेकी तथा हिंसात्मक प्रकृति वाला प्राणी है। इन घटिया प्रवृत्तियों को समाज में खुले तौर पर कार्य करने की छूट नहीं दी जा सकती है और इनके विरुद्ध केवल एक ही विकल्प है–शक्तिशाली सरकार तथा परम्परागत मूल्य क्योंकि इन्होंने ही अभी तक समाजों को जिन्दा तथा सुरक्षित रखा है। इस विचार की उदारवाद के साथ तुलना

की जा सकती है जिसका मानना है कि यदि उचित वातावरण तैयार किया जाये तो व्यक्ति को आदर्श व्यक्ति बनाया जा सकता है (सामान्यत: सामाजिक इन्जिन्यरी के तरीकों द्वारा)। संकीर्णवाद के आलोचकों का मानना है कि यह धनिक वर्ग की निम्न वर्ग के विरुद्ध अपना वंशानुगत सम्मान तथा विशेषाधिकारों को बनाये रखने की चाल के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। 19वीं शताब्दी में संकीर्णवाद की सबसे बड़ी चिन्ता थी कि अधिकारों का विस्तार निम्न वर्ग की ओर किया जा रहा है जबकि 20वीं शताब्दी में यह समाजवाद के विरुद्ध संघर्ष में इतना उलझा रहा कि कुछ लोगों ने संकीर्णवाद को सभी प्रकार की विरोधी (anti) प्रवृत्तियों के साथ जोड़ना आरम्भ कर दिया। वर्तमानकाल के सभी विचार एवं आन्दोलन–जैसे नारीवाद, पर्यावरण, उग्रवादी प्रजातान्त्रिक सिद्धान्त, मानव अधिकार–संकीर्णवादी विचारधारा के विरुद्ध है।